Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध

(माध्यमिक स्तर के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 मुकुन्द मोहन पाण्डेय
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
डिर्पाटमेण्ट ऑफ स्पेशल एजुकेशन (एच.आई.)
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

Article Info
Volume 4 Issue 5
Page Number : 178-184

Publication Issue :
September-October-2021

Article History
Accepted : 01 Sep 2021
Published : 15 Sep 2021

सारांश– प्रस्तुत अध्ययन ''श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन'' है। जनसंख्या से अभिप्राय उन सभी छात्र–छात्राओं के समूह से है, जो प्रयागराज शहर के माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है। न्यादर्श के रूप में प्रयागराज शहर में स्थित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 30 श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम परीक्षण डॉ0 टी0आर0 शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक अचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट' जिसमें कुल 38 प्रश्न हैं। डा0 करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित ''स्कूल इन्वायरमेण्ट इन्वेन्ट्री'' का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष निम्नवत् है– निष्कर्ष के रूप में सम्पूर्ण श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया तथा शहरी छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया जबकि ग्रामीण क्षेत्र के श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

की–वर्ड– श्रवण बाधित, शहरी, ग्रामीण, छात्र–छात्राएँ, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा, विद्यालय वातावरण, सहसम्बन्ध गुणांक।

प्रस्तावना– किसी भी देश का निर्माण अच्छे नागरिकों से होता है। इन नागरिकों से ही प्रजातन्त्र सफल होता है, और अच्छे नागरिकों का निर्माण करती है शिक्षा। मानव को पूर्ण मानव बनाने एवं उसे राष्ट्र का एक सफल नागरिक बनाने में शिक्षा के प्रत्येक स्तर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा की प्रथम सीढ़ी, जिसे प्राथमिक शिक्षा के नाम से जाना जाता है, मनुष्य के चरित्र का निर्माण करने में, उसमें राष्ट्रीय विचारधारा का उदय करने में 'महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संविधान की धारा 45 के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य कर देने के कारण इस स्तर पर अधिकांशतः विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं, किन्तु

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

माध्यमिक शिक्षा, जो कि शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसे शिक्षा की रीढ़ कहा गया है, जिसे ग्रहण करने के बाद बालक अपने व्यवहारिक जीवन में प्रविष्ट करता है, इतने महत्वपूर्ण स्तर तक आते–आते 70 प्रतिशत विद्यार्थी पढ़ाई छोड़ देते है।

शिक्षक की भूमिका सर्वप्रथम एक मनोवैज्ञानिक के रूप में है। शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह कक्षा में उपस्थित विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, प्रेरणाओं एवं मनोवृत्तियों की जानकारी रखें। शिक्षक विद्यार्थियों को समझने में जिस सीमा तक सफल होते हैं उसी समय तक उनका अध्यापन प्रभावी होता है तथा विद्यार्थी उनकी शिक्षा से लाभान्वित हो पाते हैं। अतः एक सफल शिक्षक ऐसे विद्यार्थी की सहायता करता है और उसकी समायोजन समस्या के समाधान का प्रयास करता है। इसी तरह पढ़ाई छोड़ना, अनुपस्थित होना आदि के कारणों को जानने तथा इनके निराकरण के लिए सफल शिक्षक प्रयास करता हैं शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, सहयोग, एकता का भाव आदि विशेषताएँ देखी जाती है। वह विद्यार्थियों को पूरी स्वतंत्रता दे देता है और उनके व्यवहारों में किसी तरह की बाधा अपनी ओर से नहीं डालता है। कक्षा में शिक्षक एक विशेषज्ञ की भूमिका में होता है अतः शिक्षक को अपने अध्यापन विषय की पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए ताकि विद्यार्थियों को अध्यापन के द्वारा अधिक से अधिक लाभ मिल सके। शिक्षक को शिक्षा के उद्देश्य से अवगत होना चाहिए कि शिक्षा वर्तमान में शिक्षार्थी केन्द्रित हो चली है और इसका उद्देश्य है विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास। अतः शिक्षक को इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर शिक्षा देनी चाहिए। ताकि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास अर्थात् मानसिक, शारीरिक, हस्तकौशल तथा हृदय विकास समुचित रूप से हो सकें।

अलथाफ लिण्डे एण्ड मासन (2007) ने अध्ययन में पाया कि– जिन कक्षाओं का वातावरण अच्छा एवं अध्यापकों का छात्रों के प्रति दृष्टिकोण अच्छा था उस कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा अन्य कक्षाओं के छात्रों की अपेक्षा अधिक थी। **गुप्ता, लीलेश (2016)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया– शहरी पॉलीटेक्निक कॉलेज के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा मध्यमान अधिक है साथ ही वहाँ के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक पायी गई। शहरी पॉलीटेक्निक कॉलेज के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। **मेनारिया, सरिता एवं बाबल, जगदीश (2017)** ने निष्कर्ष रूप में पाया– उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास कोई अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों के आत्मविश्वास में समानता पायी गयी। उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा कोई अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों के उपलब्धि अभिप्रेरणा में समानता पायी गयी। **त्रिपाठी, सुनील मणि एवं सिंह, जय (2017)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई अन्तर नहीं है। माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने पर सार्थक प्रभाव पाया गया। **महावर, ज्योति एवं पारीक, अलका (2018)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया – शिक्षकों के नेतृत्वशीलता एवं विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में कोई सार्थक सहसम्ध नहीं है। सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में सार्थक अन्तर है अर्थात् गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अभिप्रेरित व्यवहार सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

अतः वर्तमान समय में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विद्यालय में एक कुशल शिक्षक द्वारा उनके भाग्य का बदल सकता है एवं उन्हें सामान्य विद्यार्थियों की तरह जीवन में सफल बनाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

वैसे भी सामान्यतः यह देखा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर अपव्यय तथा अवरोधन की समस्या के अतिरिक्त शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले अनेक कारक उत्तरदायी हैं। जैसे – सामाजिक आर्थिक स्थिति, भौगोलिक दशायें, जनसंचार साधनों से पृथकता, अप्रांसगिक पाठ्यक्रम, अनुपयुक्त शिक्षण विधियाँ बालकों के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति, रुचि, बुद्धि आकांक्षा स्तर तथा उच्च मानसिक योग्यता एवं निम्न मानसिक योग्यता, विद्यालय का सामाजिक– मनोवैज्ञानिक पर्यावरण, गृह–पर्यावरण, समायोजन एवं माता–पिता का प्रोत्साहन इत्यादि।

उपलब्धि अभिप्रेरणा शैक्षिक परिश्रम का आखिरी उत्पादन है। सभी शैक्षिक कोशिशों का आशय यह है कि यह देखा जाये कि सीखने वाले ने क्या उपलब्धि अभिप्रेरणा प्राप्त की है। इसकी पुष्टि छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिवक्ति से है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्र–छात्राऐं अपनी विभिन्न मानसिक योग्यताओं का विकास करते हैं।

श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शिक्षा में किस प्रकार के विद्यालयों का विशेष योगदान है, जिससे कि विद्यार्थियों में शैक्षिक स्तर को सुधारने के लिए दूसरे प्रकार के विद्यालयों को उसी स्तर पर लाया जा सके। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन का सही महत्व है, प्रस्तुत समस्या का विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के साथ ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन की दृष्टि से भी महत्व है आधुनिक युग में व्यक्तिवादी राज्यों का उदय विश्व के रंगमंच पर हुआ है जिनका उद्देश्य नागरिकता के भविष्य का निर्माण में आने वाली समस्याओं का समुचित निवारण ही करना चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन का शैक्षिक दृष्टि से अध्ययन कर शिक्षा के स्तर को बढ़ाना भी है।

समस्या कथन– "श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध।"

अध्ययन का उद्देश्य– अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ– प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन की शोध विधि– वर्तमान अध्ययन वर्णनात्मक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण शोध की प्रतिदर्श सर्वेक्षण के मूल्यांकन सर्वेक्षण की श्रेणी में आता है, अतः शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या– जनसंख्या से अभिप्राय उन सभी छात्र–छात्राओं के समूह से है, जो प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श– न्यादर्श के रूप में प्रयागराज शहर में स्थित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 30 श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण– अध्ययन का प्रथम परीक्षण डॉ0 टी0आर0 शर्मा द्वारा निर्मित **'एकेडमिक अचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट'** जिसमें कुल 38 प्रश्न हैं तथा डा0 करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित ''स्कूल इन्वायरमेण्ट इन्वेन्ट्री'' का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ :

सहसम्बन्धात्मक गुणांक–

$$r = \frac{N\sum fd_x dy - \sum fd_x . \sum fd_y}{\sqrt{\left[N\sum fd_x^2 - \left(\sum fd_x\right)^2\right]\left[N\sum fd_y^2 - \left(\sum fd_y\right)^2\right]}}$$

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन करना –

H_{01} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–01

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं विद्यालयी वातावरण	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
विद्यालयी वातावरण	30	0.4336*	.05

* .05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या–01 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.4336 है जो 28 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.361 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर

अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण की विमा नियंत्रण की कमी या वृद्धि का उनके शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कमी एवं वृद्धि से सम्बन्ध है।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित शहरी छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन करना –

H_{02} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित शहरी छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–02

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित शहरी छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं विद्यालयी वातावरण	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
विद्यालयी वातावरण	15	0.5224*	.05

* .05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या–02 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित शहरी छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.5224 है जो 13 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.514 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित शहरी छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित शहरी छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण की विमा नियंत्रण की कमी या वृद्धि का उनके शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कमी एवं वृद्धि से सम्बन्ध है।

3.माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन करना –

H_{03} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–03

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं विद्यालयी वातावरण	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
विद्यालयी वातावरण	15	0.1059	.05

* .05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या–03 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.1059 है जो 13 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.514 से कम है। यह मान 0.05 स्तर पर असार्थक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है। अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित ग्रामीण छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण की विमा नियंत्रण की कमी या वृद्धि का उनके शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कमी एवं वृद्धि से सम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित शहरी छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन **"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके विद्यालयी वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन"** है। निष्कर्ष के रूप में सम्पूर्ण श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया तथा शहरी छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया जबकि ग्रामीण क्षेत्र के श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है। अतः ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा को उच्च स्तरीय बनाने के लिए विद्यालयी वातावरण में सुधार करने की आवश्यकता है जिससे उनके शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का सम्बन्ध उनके विद्यालयी वातावरण से हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. साराह ई0 अलथाफ, क्रिस्टेन जे0 लिण्डे जॉन मासन, (2007) 'हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स एकेडमिक एचीवमेन्ट स्टूडेण्ट मोटीवेशन, क्लासरूम कम्न्यूकेशन, डिजरटेशन थीसिस ऑन लाइन सर्मथन।

2.मौला, जे.एम. (2010). ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक एचिवमेण्ट मोटिवेशन एण्ड होम इन्वायरमेण्ट एमंग स्टैण्र्डड ऐट पीपुल्स, एजुकेशनल रिसर्च एण्ड रिव्यूस, वॉल्यूम–5(5), पृ0 213–217

3.भाटिया, अंशु एवं चौधरी, इन्दिरा (2013). उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल एजुकेशनल ई–जर्नल, वॉल्यूम–II, इश्शू–I, पृ0 55–62

4.गुप्ता, लीलेश (2016). तकनीकी शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का एक अध्ययन, इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम–7, इश्शू–6, पृ0 84–87
5.उठवाल, राहुल (2017). एक शिक्षक की प्रेरणा, उत्प्रेरक के रूप में चुनौतियाँ एवं समाधान, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, वॉल्यूम–3, इश्शू–5, पृ0 06–08
6.सिंह, विवेक एवं सिंह, जय (2017). किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वॉल्यूम–2, इश्शू–2, पृ0 103–106
7.मेनारिया, सरिता एवं बाबल, जगदीश (2017). उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य (अस्थिदोष रहित) एवं अस्थिदोष दिव्यांग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन, इनोवेशन द रिसर्च कन्सेप्ट, वॉल्यूम–2, इश्शू–11, पृ0 182–186
8.महावर, ज्योति एवं पारीक, अलका (2018). शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इन्सपीरा–जर्नल ऑफ मार्डन मैनेजमेण्ट एण्ड इण्टरप्रीन्यूरशिप, वॉल्यूम–08, नं0 04, पृ0 552–554
9.कौल, संगीता (2016). उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं की छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव, इमर्जिंग रिसर्च जर्नल, वॉ0 1, इश्शू–2, पृ0 30–33
10.सिंह, प्रमिला (2017). रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल स्तर पर पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट, वॉ0 4, इश्शू 2, पृ0 278–281
11.जादौन एवं पारीक (2017). जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं व व्यक्तित्व विकास में सह सम्बन्ध का अध्ययन, बियानी गर्ल्स बी0एड0 कालेज, जयपुर (राजस्थान)
12.पाण्डेय एवं सिन्हा (2017). शिक्षा में पाठ्य सहगामी क्रियाएं एवं विभिन्न मूल्य निर्माण में इन क्रियाओं की उपादेयता, नेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट, वॉ0 2, इश्शू–2, पृ0 128–129
13.कुमार, राजेश (2018). माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल, चेतना, वॉ0 1, इयर–3, पृ0 210–217
14.राय, शैलजा (2018). शिक्षा में पाठ्य सहगामी क्रियाएं एवं विभिन्न मूल्य निर्माणः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एण्डवांस एजुकेशन रिसर्च, वॉ0 3, इश्शू–2, पृ0 269–270